बदलते समय के साथ संगीत भी बदलता है और प्रस्तुतीकरण का ढंग भी

पद्मविभूषण उस्ताद अमजद अली खां के साथ पंडित विजयशंकर मिश्र का विचारोत्तेजक संवाद

सरोद के शिखर पुरुष, पद्म विभूषण सहित देश विदेश के अनेकानेक सम्मानों से सम्मानित उस्ताद अमजद अली खान उस स्तर के कलाकार हैं, जिनके पास बैठने से कुछ न कुछ सीखने का अवसर हर बार मिलता है। पिछले दिनों जब उनसे एक औपचारिक बातचीत करने के लिए दिल्ली स्थित उनके निवास पर पहुंचा और मेरे छायाकार श्री मनमोहन डोगरा अपना कैमरा ठीक करने लगे तो खान साहब ने उन्हें निर्देशित करते हुए कहा- 'कैमरा को नीचे रखिए क्योंकि जिसका फोटो लिया जा रहा है उसे हमेशा ऊपर रहना चाहिए।' फिर मेरी और देखकर बोले- 'ये बात मुझे गुलजार साहब ने बताई है।' मतलब यह कि कहां से कौन सी जानकारी मिली इसे बताना भी वे नहीं भूलते। यही है एक बड़े और महान कलाकार की पहचान।

मुझे इस बात की खुशी है कि वे मेरे साथ हर बार अत्यंत सहजता, सरलता और आत्मीयता से पेश आए.... इस बार भी...। मेरे साथ सहयोग के लिए गई युवा कथक नृत्यांगना अस्मिता मिश्र ने बाहर निकलते ही पहला वाक्य यही कहा कि-वाह ! इतना बड़ा संगीतकार और इतना सरल? लेकिन खान साहब की विशेषता सिर्फ उनकी सरलता नहीं है, उनकी विशेषता यह भी है कि उन्हें संगीत की दुनिया के बारे में गहरी जानकारी भी है। वे केवल अपनी दुनिया, संगीत, घर-परिवार और शिष्यों में ही सिमटे नहीं रहते हैं, जैसा कि अधिकांश संगीतकार करते हैं, बल्कि उस्तादजी सांगीतिक दुनिया की पूरी खोज खबर रखते हैं। मैं उनका साक्षात्कार लेना शुरू करूं उसके पहले ही उन्होंने मुझसे गायन, वादन, नर्तन, कथक, भरतनाट्यम और ओडिसी नृत्य तथा संगीत के विषय में ढेरों सवाल पूछ लिया। कई भूले-बिसरे कलाकारों के बारे में भी आत्मीयता के साथ पूछा। आरा, पटना, कटनी, मिर्जापुर जैसे छोटे शहरों में जहां उन्होंने कभी बजाया था वहां के सांगीतिक वातावरण के विषय में पूछा और फिर बोले कि- 'यह अच्छी बात है कि आप बाहरी दुनिया की भी पूरी खबर रखते हैं जो आज के जमाने में बहुत जरूरी है।'

समय का सम्मान

बातचीत औपचारिक होनी थी इसीलिए सहयोगी और छायाकार भी साथ में थे अस्मिता और मनमोहन के रूप में, किन्तु उस्तादजी के सहज सरल व्यवहार, अनौपचारिक बातचीत और सुस्वादु पोहा तथा मिठाइयों ने बातचीत को पूरी तरह से अनौपचारिक बना दिया था। इसलिए मैं भी उसी रास्ते पर मुड़ गया। खान साहब के लिए कहा जाता है कि अगर किसी समारोह का शुभारंभ उनसे होना है या किसी समारोह में सिर्फ उन्हें ही बजाना है तो वे ठीक समय पर मंच पर उपस्थित होते हैं और ठीक समय पर पर्दा उठता है। इतने ठीक समय पर कि आप अपनी घड़ी मिला सकते हैं। मैंने अपनी बात यहीं से शुरू की कि समय को इतना अधिक महत्व देने का कारण क्या है? जबकि हमलोग 'इंडियन टाइम' कहकर समय की मर्यादा कम करने के अभ्यस्त हो गए हैं? उस्तादजी ने मेरी ही बात से उत्तर निकाल लिया और बोले कि 'बस यही बात है कि समय की मर्यादा कम नहीं होनी चाहिए, क्योंकि हमारा संगीत बहुत कुछ समय सिद्धांत पर टिका हुआ है। इसलिए हमें इसके अनादर का कारण कभी नहीं बनना चाहिए। प्राय: मुख्य अतिथि के रूप में